ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

119

सबलोग

अप्रैल 2023 • मूल्य ₹ 40

महावीर के जन्मस्थान की पुनर्स्थापना

- नये शीत युद्ध की आहट
- वर्तमान दौर में कर्पूरी ठाकुर की प्रासंगिकता
- प्रकृति के चीत्कार के बीच आशा

सबलोग –119

वर्ष 14, अंक 09, अप्रैल 2023

ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER-REVIEWED, JOURNAL

सम्पादक
किशन कालजयी

संयुक्त सम्पादक
प्रकाश देवकुलिश
राजन अग्रवाल

ब्यूरो
उत्तर प्रदेश : शिवाशंकर पाण्डेय
मध्यप्रदेश : जावेद अनीस
बिहार : कुमार कृष्णन
झारखण्ड : विवेक आर्यन

समीक्षा समिति (Peer Reviewed Committee)
आनन्द कुमार
सुबोध नारायण मालाकार
मणीन्द्र नाथ ठाकुर
आशुतोष
सफदर इमाम कादरी
मधुरेश
आनन्द प्रधान
मंजु रानी सिंह
महादेव टोप्पो
विजय कुमार
आशा
सन्तोष कुमार शुक्ल
अखलाक 'आहन'

प्रबन्ध निदेशक
अभय कुमार झा

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, तीसरा तल, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
+ 918340436365

sablogmonthly@gmail.com, sablog.in

वेब सहायक : गुलशन कुमार चौधरी

सदस्यता शुल्क
एक अंक : 40 रुपए–वार्षिक : 450 रुपए
द्विवार्षिक : 900 रुपए – आजीवन : 5000 रुपए

सबलोग
खाता संख्या-49480200000045
बैंक ऑफ बड़ौदा, शाखा-बादली, दिल्ली
IFSC-BARB0TRDBAD

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिन्टर्स, 556 जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका अव्यावसायिक और सभी पद अवैतनिक।
पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिये न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

महावीर के जन्मस्थान की पुनर्स्थापना

पुनर्स्थापना के तर्क : **श्यामानन्द प्रसाद** 6

पाश्चात्य विद्वानों के मतों का परिमार्जन : **राधाकृष्ण चौधरी** 10

जैन सूत्रों में कुण्डपुर : **राम रघुवीर** 13

इतिहासविदों की तार्किकता : **भँवरलाल नाहटा** 16

महावीर के आविर्भाव का अनुशीलन : **मुनि नेमिचन्द्र** 20

पुरातत्त्व की कसौटी पर कुण्डग्राम : **प्रकाश चरण प्रसाद** 24

पाश्चात्य इतिहास दृष्टि और तथ्य : **ठाकुर हरेन्द्र दयाल** 28

खत्तिय कुण्डग्राम का भौगोलिक सच : **सीताराम राय** 32

सन्निवेशों की यात्रा और जन्म-स्थान : **सरयुग प्रसाद सिंह** 34

क्षत्रिय कुण्डग्राम लछुआड़ ही है जन्मस्थान : **आचार्य श्री गुणसागर सुरीश्वर** 37

राज्य

पंजाब / मान सरकार का एक वर्ष : **गुलशन चौधरी** 39

स्तम्भ

चतुर्दिक / मैनेजर पाण्डेय साहित्यवादी आलोचक नहीं हैं : **रविभूषण** 41

यत्र-तत्र / नये कथाकारों की कहानियों पर विमर्श : **जय प्रकाश** 44

कथित-अकथित / अमरीका और चीन–नए शीतयुद्ध की आहट : **धीरंजन मालवे** 47

खुला दरवाजा / जलपरियाँ : मिथक या यथार्थ : **ध्रुव गुप्त** 49

तीसरी घण्टी / मंच सज्जा का यथार्थ : **राजेश कुमार** 50

जन-गण-मन / टूटते विवाह, सिसकते परिवार : **रसाल सिंह** 53

विविध

अन्तर्राष्ट्रीय / अफगानिस्तान में बर्बर तालिबानी ताकत : **दीपक कुमार त्यागी** 55

जन्मशती / वर्तमान दौर में कर्पूरी ठाकुर की प्रासंगिकता : **प्रेम सिंह** 58

पर्यावरण / बिन माटी सब सून : **फिरदौस खान** 60

सिनेमा / प्रकृति के चीत्कार के बीच आशा : **रक्षा गीता** 62

स्मृति आलेख / सम्भावनाओं का खत्म हो जाना.... : **विवेक आर्यन** 65

पुस्तक समीक्षा / 'कौल-ए-फैसल' : **आलोक टंडन** 66

आवरण : शशिकान्त सिंह

अगला अंक : संस्थाएँ, स्वायत्तता और संविधान

चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का वास्तविक जन्मस्थान

किसी देश के इतिहास या ऐतिहासिक सच पर उस देश की राजनीतिक स्थितियों का व्यापक असर पड़ता है। विदेशी शासकों के अधीन रहे हमारे देश के कई ऐतिहासिक तथ्य इस सचाई के शिकार रहे हैं।

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर श्रमण महावीर के जन्म स्थान को लेकर पुरातत्त्वविदों एवं इतिहासकारों में भ्रम इसका उदाहरण है। यूरोपीय पुरातत्त्वविद हरमन जैकोबी, हार्नले तथा विसेंटस्मिथ की धारणा थी कि वैशाली (बिहार) ही महावीर का जन्म स्थान है, जिसे सन 1948 में ही प्राचीन इतिहास के पुरोधा डॉ. योगेन्द्र मिश्र ने भी सही मान लिया। बिहार के तत्कालीन शिक्षा सचिव डॉ. जगदीश चन्द्र माथुर ने भी इसी धारणा की पुष्टि करते हुए वैशाली महोत्सव की शुरुआत करवा दी। पर जैनियों के बहुत बड़े वर्ग का तीर्थ के रूप में जमुई (तब मुंगेर जिले का एक अनुमण्डल, अब बिहार का एक जिला) आना-जाना लगा रहा, जिसने 1961 में कुमार कालिका मेमोरियल कॉलेज, जमुई महाविद्यालय के हिन्दी के प्रोफेसर डॉ. श्यामानन्द प्रसाद का ध्यान आकर्षित किया। अतिरिक्त रुचि के कारण उन्होंने जैनियों के इस स्थान की यात्रा के कारणों की पड़ताल की तथा उस स्थान तथा वहाँ पाए जाने वाले भग्नावशेषों का अध्ययन आरम्भ किया। उन्होंने इस अनुसन्धान को सही दिशा में आगे बढ़ाया, इसीलिए इस मुद्दे को अवधारणात्मक और तार्किक अभिव्यक्ति मिली। उन्होंने टीम वर्क के साथ भगवान महावीर के वास्तविक जन्मस्थान से सम्बन्धित सारे स्थलों का श्रमसाध्य निरीक्षण किया, यथाशक्ति खुदाई करायी, फोटोग्राफ तैयार किये तथा प्रशासन के सहयोग से जरूरी मूर्तियाँ प्रकाश में लायीं। जमुई के ऐतिहासिक क्षेत्रों ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने इन तथ्यों से पर्दा हटाने का संकल्प लिया और 'अनुमण्डलीय साहित्य संस्कृति अनुसन्धान केन्द्र, जमुई' की स्थापना की। इस क्रम में उन्होंने साक्ष्यों का एक सशक्त संकलन अपनी पुस्तक 'श्रमण भगवान महावीर का जन्मस्थान–क्षत्रियकुण्डग्राम जमुई' के रूप में प्रस्तुत किया। जगह-जगह विचार-गोष्ठियों का उन्होंने आयोजन किया। उनकी उक्त पुस्तक जन्मस्थान से सम्बन्धित सभी सूत्रों, धार्मिक आख्यानों, लोक चर्चाओं एवं स्थल के पूर्णरूपेण निरीक्षण की परिणति है। इन तथ्यों को विस्तार से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से उन्होंने 'जमुई का इतिहास' नामक शोधात्मक पुस्तक भी लिखकर प्रकाशित करवायी। डॉ. प्रसाद की उक्त पुस्तक की समीक्षा के क्रम में श्री रंजन सूरिदेव जी ने लिखा है–''शोध सूक्ष्मेक्षिका-सम्पन्न लेखक ने भगवान महावीर की जन्मभूमि और निर्वाण भूमि से सम्बद्ध भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थलों की जो पहचान प्रस्तुत की है, उसमें पर्याप्त तथ्य हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लेखक ने अँधेरे में लाठी नहीं चलायी है, अपितु उसने स्वीकृत विषय से सम्बद्ध शास्त्रीय साक्ष्यों का पाण्डित्यपूर्ण पुनर्मूल्यांकन उपस्थापित किया है।'' उनके इस गुरुतर कार्य का समर्थन तत्कालीन प्राचीन इतिहासकारों, भारतीय पुरातत्त्व विभाग की बिहार शाखा के मूर्धन्य पुरातत्त्वविदों एवं जैनधर्म के प्रतिष्ठित मुनियों ने भी किया और तत्सम्बन्धी प्रस्ताव पर प्रामाणिकता की मुहर भी लगा दी।

उन्होंने इस कार्य में जाने-माने इतिहासकारों और पुरातत्त्वविदों का ध्यान आकर्षित करने में सफलता पायी, फिर पुरातत्त्व से जुड़े सरकारी विभागों का भी ध्यान इस ओर गया और काफी खोजबीन के बाद यह समझ में आया कि जैन धर्म ग्रन्थों में महावीर के जन्म स्थान के रूप में पर्वत मालाओं से घिरे जिस खत्तिय अर्थात क्षत्रिय कुण्डग्राम की चर्चा है वह वैशाली न होकर जमुई जिले के लछुआड़ ग्राम के निकट का स्थान है। (लछुआड़ वास्तव में लिच्छवी का परिवर्तित रूप है।)

इस बात पर तो मतैक्य है कि महावीर की माता त्रिशला थीं, जो वैशाली के राजा चेटक की बहन थीं तथा महावीर का जन्म ईसा के लगभग छठी शताब्दी पूर्व क्षत्रिय कुण्डग्राम नामक स्थान में हुआ था। कुण्डग्राम एक महाग्राम था जो दो ग्रामों में विभक्त था–ब्राह्मण (माहण) कुण्डग्राम और क्षत्रिय (खत्तिय) कुण्डग्राम। त्रिशला क्षत्रिय कुण्डग्राम के राजा सिद्धार्थ की पत्नी थीं। क्षत्रिय कुण्डग्राम वास्तव में कहाँ है, वैशाली में या जमुई के लछुआड़ में–विवाद इस पर रहा।

डॉ. श्यामानन्द प्रसाद ने जैन सूत्रों तथा ग्रन्थों में वर्णित भौगोलिक परिवेश की चर्चा का अध्ययन कर तथा स्थलों का भ्रमण एवं अनुसंधान कर यह समझ लिया कि जमुई के लछुआड़ के समीप ही क्षत्रिय कुण्डग्राम है। इस विषय पर उनकी लिखी पुस्तक ने इतिहासकारों का ध्यान आकर्षित किया। नवम्बर 1984 में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए एक ऐतिहासिक सम्मेलन ने बहुत हद तक उस धुन्ध को साफ कर दिया जो महावीर के जन्मस्थान के सन्दर्भ में सदियों से छाया हुआ था। जैनियों के तीर्थ स्थल गिरिडीह (अब के झारखण्ड) में स्थित पारसनाथ के मधुबन में तीन दिवसीय (24, 25 और 26 नवम्बर 1984) 'अखिल भारतीय इतिहासज्ञ विद्वत सम्मेलन' सम्पन्न हुआ जिसमें सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा पुरातत्त्वविद डॉ. राधाकृष्ण चौधरी, राम रघुवीर, भंवर लाल नाहटा, प्रकाश चरण प्रसाद, ठाकुर हरेन्द्र आदि तथा जैनियों के शीर्ष व्यक्तित्व श्री गुणसागर सुरीश्वर के साथ-